विश्व की
महान मातायें

जयप्रकाश भारती

विश्व की महान मातायें

जयप्रकाश भारती

पालना झुलाने वाली माँ

जो हाथ पालना झुलाते हैं,

वे ही दुनिया को चलाते हैं।

माँ के बारे में इन पंक्तियों में अच्छा कुछ नहीं लिखा जा सकता। माँ जन्म देती है। वही यह भी तय कर देती है कि बालक आगे चलकर क्या बनेगा? बालक के अठारह महीने सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं-नई खोजों से हम यह जान गए हैं। उस काल में शिशु का अधिक से अधिक समय माँ के साथ बीतता है। माँ की महिमा का कोई ओर-छोर ही नहीं।

इस पुस्तक में विश्व की कुछ ऐसी माताओं की चर्चा है। जिनकी सन्तानों ने किसी न किसी क्षेत्र में स्वयं को बेजोड़ सिद्ध करके दिखाया। ये माताएँ किसी एक ही देश की नहीं हैं।

हिन्दी में जीवनियाँ बहुत छपती रहती हैं, किन्तु फिर भी यह पुस्तक अपनी तरह की पहली है। महापुरुषों के बारे में जानकारी मिल जाती है। उनकी माताओं के बारे में कहीं कुछ नहीं मिलता-बहुत हुआ तो दो-चार पंक्तियाँ लिखी होती हैं। कई माताएँ तो बालक के छुटपन में ही मर गईं, जैसे लिंकन की माँ। अधिकतर माताओं के चित्र भी नहीं मिल पाते। ऐसे में इस लेखक को पुस्तक तैयार करने में काफी खोज-बीन करनी पड़ी। यदि पाठकों ने इसे पसन्द किया तो ऐसी ही दो और पुस्तकें तैयार करने का विचार है।

ये जीवनियाँ सरल भाषा में लिखी गई हैं। रोचक है, प्रेरक भी हैं।

-जयप्रकाश भारती

सम्पादक 'नन्दन'

क्रम

स्कूल से ही उठा लिया	:	नैन्सी इलियट	4
राजाओं के लिए कंजूसी	:	लित्जिया रामोलिन	7
मुझे तेरा विश्वास है	:	पुतलीबाई	10
विज्ञान की वेदी पर बलिदान	:	मेरी क्यूरी	13
नकल की कला सिखाई	:	लिली हारले	16
लड़के की आदत तुमने ही खराब की	:	जगरानी देवी	20
मेहनत करना-मोटा खाना	:	नैन्सी हैंक्स	24
ममता में डूबा संगीत	:	मारिया ब्लांक	27

महान् वैज्ञानिक एडीसन की माँ : नैन्सी इलियट

स्कूल से ही उठा लिया

(रेलवे स्टेशन पर छाबड़ी में फल और मिठाइयां बेचने से उसने अपना जीवन आरम्भ किया। बाद में अखबार भी बेचने लगा। वैज्ञानिक परीक्षणों का शौक उसे बचपन से ही था। चलती गाड़ी में बनी उसकी प्रयोगशाला में परीक्षण चलते रहे। थामस अल्वा एडीसन को विश्व का सबसे महान आविष्कारक कहा जा सकता है। बिजली के बल्ब के अलावा उन्होंने ग्रामोफोन, माइक्रोफोन, सिनेमा मशीन आदि हजार से भी अधिक चीजें ईजाद कीं। आश्चर्य यह हैं कि एडीसन ने स्कूल या कालिज में शिक्षा नहीं पाई।)

आल को स्कूल जाते अभी तीन महीने हुए थे। एक दिन वह स्कूल से लौटा तो गुस्से से उसकी त्यौरियाँ चढ़ी थीं। उसने अपना बस्ता कमरे में मेज पर पटक दिया। रसोई में माँ के पास पहुँचा। माँ शाम का खाना बनाने की तैयारी कर रही थी।

"माँ-माँ, बुद्धू, किसे कहते हैं?"- बालक आल ने पूछा।

श्रीमती नैन्सी इलियट ने उसकी ओर देखा और बोली- "जो मूर्ख हो या कमअक्ल हो।"

"तो क्या मैं ऐसा ही हूँ? मास्टर मुझे रोज बुद्धू कहकर चिढ़ाते हैं।"

"नहीं बेटा! तुम बुद्धू तो नहीं हो।" श्रीमती नैन्सी कुर्सी पर बैठ गई, उन्होंने बालक को पास ही खींच लिया। वह रुआँसा हो रहा था। उन्होंने बालक में सभी बातें पूछीं। वह जान गईं कि उनका बेटा विद्यालय में प्रसन्न नहीं है।

अगले दिन श्रीमती नैन्सी ने आल से कहा- "बेटे, कल रात मैंने तुम्हारे पिता से तुम्हारे बारे में देर तक बातें की। शादी से पहले मैं वियना के स्कूल में पढ़ाया करती थी। अगर मैं तुम्हें घर पर ही पढ़ाया करूँ तो क्या तुम्हें प्रसन्नता होगी?"

भोले आल की आँखें खुशी से चमक उठीं। वह बोला- "क्या मैं उन सब चीजों के बारे में सवाल पूछ सकूँगा, जिनके बारे में मैं जानना चाहता हूँ।"